22 OCT 12 2026.qxd 21-10-2026 22:51 Page 1

विश्व में सबसे कम समय का सबसे बड़ा मेला

गले मिले जब चारों कुमार, नयनों से बही अश्रुधार



काशी का सांसद होने के नाते मुझे इस परंपरा को लेकर विशेष गर्व की अनुभूति हो रही है। इस पोस्ट के साथ ही प्रधानमंत्री ने भरत मिलाप के लक्खा मेला की चार तस्वीरें भी संलग्न की हैं। विश्व में सबसे कम समय का सबसे बड़ा मेला है। परंपराओं की एक समृद्ध और गौरवशाली गाथा समेटे महज 15 मिनट के इस आयोजन में लाखों की भीड़ उमड़ती है और महज चार मिनट के नयनाभिराम दृश्य के लिए अपनी संपूर्ण संवेदना, आस्था उड़ेल कर रख देती है। आज से 480 वर्ष पूर्व जब गोस्वामी तुलसीदास यहां श्रीरामचरित मानस की रचना कर रहे थे, उसी समय 1543 ईस्वी में उनके शिष्य संत मेधा भगत ने इस मेले का शुभारंभ किया था। मेले के साथ जुड़ी परंपराएं भी आश्चर्य से कम नहीं। यहां प्रभु श्रीराम को लेकर आने वाले पुष्पक विमान का वजन 5000 किलोग्राम है, जिसे लगभग 100 यादव बंधु परंपरानुसार अपने कंधों पर उठाकर लगभग चार किमी की दूरी तय करते हैं। हालांकि प्रभु की पालकी उठाने के लिए 500 यादव बंधुओं का दल तैयार रहता है और अपना कंधा लगाता रहता है। यादव बंधु इस कार्य के लिए नई धोती, नई बनियान व नई पगड़ी धारण करते हैं, आंखों में काजल लगाते हैं और पूरे भक्ति भाव से प्रभु की पालकी उठाते हैं। अपने पूर्वजों की परंपरा का पालन करते हुए काशीराज परिवार के कुंवर अनंत नारायण सिंह हाथी पर सवार होकर लीला स्थल पहुंचते हैं, हाथी पर से ही प्रभु श्रीराम के साथ सबका अभिवादन करते हुए उनके विमान के पास पहुंच प्रसाद स्वरूप तुलसी दल और पुष्प पंखुड़ियां ग्रहण कर सोने की गिन्नी आयोजकों को प्रदान करते हैं। परिक्रमा करते हुए निकलते समय सशस्त्र पुलिस बल उन्हें गार्ड आफ आनर प्रदान करता है। विमान के जाते ही श्रीराम व भरत चबूतरे पर बिखरे तुलसी दल व पुष्प पंखुड़ियों को प्रसाद रूप में पा लेने तथा चबूतरों पर मत्था टेकने की होड़ मच जाती है। एक ओर अस्ताचल में डूब जाने को कुछ ही शेष बचा था सूर्य का अंश, तो दूसरी ओर भ्रातृ प्रेम का अनुपम आदर्श गढ़ रहा था सूर्यवंश। बुधवार की शाम संपूर्ण ब्रह्मांड मानो ब्रह्मांडनायक की अनोखी भावलीला और आदर्श का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप देखने को ठहर सा गया था। श्रीराम-भरत मिलाप की विश्वप्रसिद्ध लीला नाटीइमली के मैदान में आयोजित हुई तो शिव की काशी में त्रेता का वह पावन क्षण सजीव हो उठा। इस लक्खा मेले में चारों भाइयों के भावपूर्ण मिलन को देख लाखों श्रद्धालुओं की पलकों से खुशियों के अनगिन मोती छलक उठे। गले मिल चारों भाइयों संग जनकनंदिनी सीता मैया ने भक्तों को दर्शन दिया। चारों भाइयों के मिलन की दुर्लभ छवि को हमेशा के लिए सहेज लेने को आतुर काशीवासियों की सजल आंखों ने गीले नयन के कोरों से समूचे दृश्य को अपने हृदय में बसाया तो सहज ही जुड़ उठे दोनों हाथ और लाखों कंठों से फूट पड़ा चारों भइयन की जय का उद्घोष वातावरण को अपनी सरस गरिमा में आच्छादित कर लिया। परंपरानुसार काशिराज परिवार के अनंत नारायण सिंह ने भी लीला स्थल पहुंच इस भावपूर्ण दृश्य को निहारा तो गिन्नियां भेंट कर तुलसीदल व पुष्प प्रसाद ग्रहण किया। दोपहर के एक बजे से ही हर पग नाटीइमली की ओर बढ़ चले थे। बांस-बल्लियों से घिरा मैदान जब लोगों से पट गया तो आसपास की सड़कें, छतें सभी लोगों से अट गईं। युवा, बुजुर्ग व बालमन सभी ने पलकों में प्रभु की मूरत बसाए, लीला मंच पर नजरें गड़ाए एक झलक पा लेने का हर प्रकार से जतन किया। घड़ी की सुइयों के 4.35 बजने का संकेत देते ही हृदय की धड़कनें बढ़ गईं। रामदूत हनुमान से हृदयप्रिय बड़े भैया के आगमन का समाचार पाकर अयोध्या (बड़ा गणेश) से नंगे पांव दौड़ते चले आए भरत-शत्रुघ्न प्रभु चरणों में साष्टांग दंडवत हुए। गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई परे भूमि नहि उठत उठाए, बल करि कृपा सिंधु उर लाए। श्यामल गात रोम भये ठाढ़े, नव राजीवनयन जल बाढ़े गूंज के बीच दौड़कर पहुंचे भक्तवत्सल प्रभु ने श्रीभरत को उठा कर गले से लगा लिया। चारों भाई बारी-बारी से गले मिले, हर ओर से पुष्पवर्षा होने लगी और 'हर-हर महादेव', 'जय श्री राम' तथा 'चारों भइयन की जय' के उद्घोष से मैदान गूंज उठा। हाथ की अंगुलियां उठ कर भावातिरेक से गीले हो चुके नयन के कोरों को पोंछतीं फिर हाथ परस्पर जुड़ जाते और भाव भरे हृदय से निकल जयकारों की ध्वनि वातावरण में आच्छादित हो जाती। चारों भाइयों ने प्रत्येक दिशाओं में घूमकर श्रद्धालुओं को दर्शन दिया और विभोर कर दिया तो दिव्य दृश्य से विह्वल अस्ताचलगामी सूर्य की किरणों ने भी प्रभु चरणों में लोटकर खुद को धन्य कर लिया। मिलन बाद विमान से चारों भाई, माता सीता व पवनसुत अयोध्या प्रस्थान किए। प्रभु के विमान पालकी के कहार बने यादव कुमार छलकती भक्तिरूपी सुधा का पान कर अघाए तो निहाल हो गए।





खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शविदा कैप्सूल
सुविचार
समय और समझ दोनों एक साथ बहुत कम मिलते हैं, इसलिए समय रहते समझदारी दिखाएं।
ARSHVEDA Capsule
AN AYURVEDIC MEDICINE FOR PILES Power of 9 Herbs
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg amazon Flipkart



अपनी जिंदगी

अग्नि के प्रकार और उनका महत्व

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

अग्नि के पाँच प्रकार होते हैं। इनमें प्रथम है भौतिक अग्नि। भौतिक अग्नि वह है जिसके द्वारा आप अपने घर को गर्म करते हैं और शरीर में उष्णता बनाए रखते हैं। यह जीवन का भरण-पोषण करती है। जहां जलवायु गर्म हो, ऐसे देशों में भौतिक अग्नि को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता, परंतु शीत प्रधान देशों में इसका बहुत महत्त्व है। भौतिक अग्नि के बिना जीवन की संभावनाएँ क्षीण हो जाती हैं। यह भौतिक अग्नि कुछ सीमा तक शरीर में भी विद्यमान रहती है। इसके पश्चात् द्वितीय प्रकार की अग्नि है जिसे कामाग्नि कहा जाता है, अर्थात् कामना या वासना की अग्नि। इसी आसक्ति या कामाग्नि के कारण इस ग्रह पर जीवन निरंतर चलता रहता है। काम की यह अग्नि समस्त जीव-जंतुओं की प्रजातियों में विद्यमान है। भोजन के अतिरिक्त, काम सबसे प्राचीन संस्कारों में से एक है। समस्त जन्मों में हमने निश्चित रूप से दो कार्य किए हैं, एक है भोजन करना और दूसरा है मैथुन। वानर, गाय या सिंह के रूप में समस्त शरीरों से गुज़रते हुए, ये दो कृत्य सदैव उपस्थित रहे हैं। तृतीय प्रकार की अग्नि को जठराग्नि कहा जाता है, जो भूख और पाचन की अग्नि है। यह आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। यदि पाचन की अग्नि मंद या तीव्र हो, तो यह आपके स्वास्थ्य और आपके संतुलन को प्रभावित करती है। भूख का अनुभव होने से पूर्व ही आप भोजन कर लेते हैं। अनेक लोग भूख के कारण नहीं, बल्कि अति-भोजन के कारण रोगग्रस्त होते हैं। यहाँ पर उपवास का सिद्धांत बहुत ही प्रासंगिक हो जाता है। जब आप उपवास करते हैं, तब आपके शरीर की प्रत्येक कोशिका जीवंत हो उठती है। उपवास एक अत्यंत उत्तम चिकित्सा है। यह आपके तंत्र को शुद्ध कर सकती है। उपवास करते समय अपने शरीर की प्रकृति और सामर्थ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है; अति-भोजन और अति-उपवास दोनों ही उचित नहीं हैं। चतुर्थ प्रकार की अग्नि, सामाजिक आलोचना का भय है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जब आपको संसार में एक निश्चित आचार-संहिता का पालन करना होता है, तो स्वाभाविक रूप से आलोचना का भय और दंडित होने का भय उत्पन्न होते हैं। यदि आप आलोचना को लेकर बहुत चिंतित हैं कि लोग आपके बारे में क्या सोचेंगे या क्या कहेंगे, तो आप मूल तत्त्व को खो रहे हैं। आलोचना की अग्नि आपके भीतर नैतिकता को बनाए रखती है। परंतु यदि यह अनियंत्रित या सीमा से बाहर हो जाए, तो यही आलोचना की अग्नि आपकी स्वतंत्रता और उन्मुक्तता की भावना को समाप्त कर सकती है। पाँचवीं अग्नि, ज्ञान या प्रेम की अग्नि है। प्रेम की अग्नि एक तड़प या तीव्र अभिलाषा से प्रारंभ होती है। यह नवीनतम प्रतीत होती है और असहज भी लग सकती है। केवल मानव जन्म में ही इस अग्नि का अनुभव किया जा सकता है। प्रेम की अग्नि या ज्ञान की अग्नि प्रारंभ में अप्रियता या तीव्र विरह की भावना उत्पन्न करती है, परंतु अंततः यह आनंद व पूर्णता के प्रस्फुटन की ओर अग्रसर होती है। जो इन पाँच अग्नियों से होकर गुज़रा है, वह शुद्ध हो गया है और वह दूसरे छोर पर पहुँच गया है।

९९ साल की दादी का अनोखा कारनामा

बढ़ती उम्र के साथ जिंदगी पहले जैसी आसान नहीं रहती। कई बुजुर्गों को घुटनों में दर्द, चलने-फिरने में परेशानी और दूसरी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ लोगों के लिए रोजमर्रा के छोटे-छोटे काम करना भी चुनौती बन जाता है। उम्र बढ़ने के साथ अकेलेपन और दूसरों पर निर्भर रहने की परेशानी भी महसूस हो सकती है। ऐसे में ज्यादातर लोगों के लिए कोई नया और जोखिम भरा काम करने के बारे में सोचना भी मुश्किल होता है. लेकिन ब्रिटेन में रहने वाली 99 साल की हेल्गा डफी ने ऐसा कारनामा कर दिखाया है, जिसे देखकर हर कोई हैरान है। उन्होंने उड़ते हुए प्लेन के पंख पर खुद को बांधकर आसमान की सैर की और



दुनिया की सबसे उम्रदराज महिला विंग वॉकर बन गईं। उनके इस कारनामे ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह बनाई है। हेल्गा डफी मूल रूप से जर्मनी की रहने वाली हैं. फिलहाल वह ब्रिटेन के विल्टशायर में डेविजेस स्थित एक केयर होम में रहती हैं। उन्होंने यह अनोखा कारनामा ग्लॉस्टरशायर के सिरेनसेस्टर स्थित आरएफसी रेंडकॉम्ब एयरफील्ड पर किया। इस चुनौती के लिए हेल्गा को एक छोटे विमान, जिसे बाइप्लेन कहा जाता है, के ऊपरी पंख पर खास सुरक्षा उपकरणों की मदद से मजबूती से बांधा गया. इसके बाद विमान ने उड़ान भरी और हेल्गा करीब आठ मिनट तक हवा में रहीं। रिकॉर्ड के लिए कम से कम पांच मिनट तक उड़ान में रहना जरूरी था. उन्होंने इस चुनौती को पूरा कर दिखाया. जिस उम्र में कई लोग लंबी दूरी तक चलने से पहले भी सोचते हैं, उस उम्र में हेल्गा का इस तरह आसमान में उड़ना अपने आप में खास उपलब्धि है.हेल्गा ने 16 अक्टूबर 2026 को यह रिकॉर्ड बनाया. उस दिन उनकी उम्र 99 साल और 21 दिन थी. गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने उन्हें दुनिया की सबसे उम्रदराज महिला विंग वॉकर के रूप में मान्यता दी। इस कारनामे के पीछे एक दूसरी बुजुर्ग महिला की कहानी भी है. हेल्गा ने 97 साल की बेट्टी ब्रोमेज को विंग वॉक करते देखा था. बेट्टी की इस उपलब्धि से प्रेरित होकर हेल्गा के मन में भी ऐसा ही कुछ करने की इच्छा जगी. उन्होंने तय किया कि वह भी यह चुनौती पूरी कर सकती हैं. हेल्गा की उड़ान पहले उनके 99वें जन्मदिन यानी 23 सितंबर को होनी थी, लेकिन किसी वजह से इसे आगे बढ़ा दिया गया। आखिरकार अक्टूबर में उन्होंने अपना सपना पूरा कर लिया। उड़ान के बाद गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिकारी विल मनफोर्ड ने उन्हें सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। अब यह सर्टिफिकेट उनके केयर होम में रखा गया है।

ई-सिगरेट बदल डालता है आवाज

वेपिंग का मतलब 'ई-सिगरेट पीना' यानी इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट से स्मॉकिंग करना है. ये सामान्य धूम्रपान से ऐसे ही अलग है कि इसमें ई-सिगरेट का इस्तेमाल किया जाता है। वेपिंग एक बैटरी से चलने वाले उपकरण जैसे ई-सिगरेट, वेप पेन, या ई-हुक्का के जरिए किसी तरल पदार्थ को गर्म करके उसकी भाप या एरोसोल को सांस के जरिए अंदर लेने की प्रक्रिया है। कई लोगों को लगता है कि वेपिंग सामान्य स्मोकिंग से ज्यादा सुरक्षित है पर ऐसा बिलकुल नहीं है। दरअसल वेपिंग में तंबाकू नहीं जलता और इसलिए लोग इसे सुरक्षित या अच्छा समझते हैं लेकिन वेपिंग से निकलने वाला धुआं सिर्फ पानी का भाप नहीं होता। इसमें कई हानिकारक चीजें होती हैं जो सांस और दिल की सेहत को नुकसान पहुंचा सकती है। वेपिंग के लिक्विड से निकलने वाले धुंए में निकोटीन, भारी धातुएँ जैसे लेड, निकेल और टिन, हानिकारक केमिकल्स, फ्लेवर देने वाले केमिकल हो सकते हैं जो साँस के साथ अंदर जाने पर नुकसान पहुंचाते हैं। ये चीजें गले और वोकल कॉर्ड्स को प्रभावित कर सकती हैं. इससे गला सूख सकता है, जलन हो सकती है और आवाज़ की क्वालिटी खराब हो सकती है. रिसर्च बताती है कि ई-सिगरेट का इस्तेमाल वोकल कोर्ड्स को प्रभावित कर सकता है। 2025 में एक अध्ययन में कहा गया कि 'ई-सिगरेट का इस्तेमाल आवाज़ की नली की ऊपरी परत में सूजन पैदा कर सकता है। इसमें मौजूद चीज़ें नमी कम कर देती हैं, जिससे खांसी और सांस लेने में तकलीफ हो सकती है।



इससे आवाज़ की नली खराब हो सकती है और आवाज़ की क्वालिटी बिगड़ सकती है।' वेपिंग के धुएं से आवाज़ की नली में जलन और सूखापन आता है। इससे आवाज़ कर्कश हो सकती है, खांसी आ सकती है और आवाज़ पर जोर पड़ सकता है. हालांकि अभी भी इस विषय पर और रिसर्च की जरूरत है कि वेपिंग कैसे आवाज को हमेशा के लिए बदलकर रख देती है। यह पहला मौका नहीं है जब सेलेना ने अपनी आवाज में आ रहे बदलाव के बारे में बात की है। दिसंबर 2025 में भी सिंगर ने अपनी आवाज के बदलाव पर बात की थी लेकिन तब सेलेना ने वेपिंग का जिक्र नहीं किया था। तब उन्होंने कहा था कि उनका गला अंदर से सूज रहा है, लेकिन अब सेलेना ने बताया कि कैसे उनकी आवाज का बदलाव वेपिंग की आदत से जुड़ा है. दरअसल सेलेना को ल्यूपस नाम की ऑटोइम्यून बीमारी है। ल्यूपस शरीर के कई हिस्सों को प्रभावित कर सकता है। कुछ मामलों में यह गले (लैरिंक्स) में सूजन पैदा कर सकता है। इससे आवाज़ कर्कश, भारी या थकी हुई लग सकती ह। ऐसे में पहले उनकी आवाज के बदलाव को इसी से जुड़ा माना गया था। पर अब सेलेना के इस नए खुलासे ने कई चीजें बदल दी हैं। जानीमानी सिंगर सेलेना गोमेज़ अपने फैंस से खुद कह रही हैं कि अगर उन्हें अब उनकी आवाज पसंद नहीं आ रही और वो उनके गाना नहीं सुनना चाहते तो लोग उनके गाने सुनना बंद कर सकते हैं. ये सेलेन का 'एटिट्यूड' या घमंड नहीं है, बल्कि उन्होंने लोगों के सामने अपनी 'निकोटीन वेपिंग' 'ई-सिगरेट' की लत के बारे में बात करते हुए ऐसा कहा है. सिंगर का कहना है कि उनकी आवाज इसकी वजह से पूरी तरह बदल गई है और अब वो इसे चाहकर भी नहीं बदल सकती हैं। सेलेना को यह भी डर है कि हो सकता है कि उनकी आवाज हमेशा के लिए बदल गई है।

व्हिसलिंग विलेज, जहां लोग एक-दूसरे को नामसे नहीं, बल्कि खास धुनसे बुलाते हैं

भारत में गांवों की अपनी अलग दुनिया है। कहीं लोग आज भी पुरानी परंपराओं को सहेजकर रखे हुए हैं, तो कहीं रहने-सहने और एक-दूसरे से बातचीत करने के तरीके लोगों को हैरान कर देते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले लोगों की भाषा, पहनावा,



खानपान और रीति-रिवाज भी अलग हैं. लेकिन क्या आपने कभी ऐसे गांव के बारे में सुना है, जहां लोग एक-दूसरे को नाम लेकर नहीं, बल्कि सीटी बजाकर या खास धुन गाकर बुलाते हैं? सुनने में यह बात थोड़ी अजीब लग सकती है, लेकिन भारत में एक ऐसा गांव है, जहां हर व्यक्ति की पहचान के लिए एक अलग धुन बनाई गई है। हैरानी की बात यह है कि यहां बच्चे के जन्म के बाद उसकी मां ही उसके लिए यह धुन बनाती है. इसी अनोखी परंपरा के कारण इस गांव को व्हिसलिंग विलेज, यानी सीटी वाला गांव के नाम से भी जाना जाता है। भारत के इस अनोखे गांव का नाम कोंगथोंग है, जो मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में स्थित है। यह राज्य की राजधानी शिलांग से लगभग 55 से 60 किलोमीटर दूर है. पहाड़ियों और हरियाली के बीच बसा यह गांव अपनी खूबसूरत प्राकृतिक छटा के साथ-साथ एक अनोखी सांस्कृतिक परंपरा के लिए भी जाना जाता है।

रश्मिका मंदाना ने दिखायी कातिल अदाएं

बात की जाए साउथ सिनेमा की लोकप्रिय अभिनेत्रियों के बारे में तो उनमें रश्मिका मंदाना का नाम भी शामिल होता है। हाल ही में सोशल मीडिया पर राणाबली एक्ट्रेस रश्मिका की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं, जिनको लेकर फिलहाल एक्ट्रेस सिनेमाई गलियारे में छाई हुई हैं। एक दिन बाद रश्मिका मंदाना की अपकमिंग फिल्म राणाबली फिल्म को बड़े पर्दे पर रिलीज किया जाना है। इसकी रिलीज से पहले उन्होंने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर लेटेस्ट तस्वीरों को शेयर किया है, उनके लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान की हैं, जो अब चर्चा का विषय बन गई हैं। इस लेख में रश्मिका मंदाना की जिन तस्वीरों के बारे में जिक्र किया जा रहा है, उनमें वह साड़ी में नजर आ रही हैं। अब रश्मिका का सादगी से भरा हुआ ये अंदाज हर किसी का ध्यान का खींच रहा है और एक्ट्रेस की फोटोज सभी को बेहद पसंद आ रही हैं। अपनी लेटेस्ट फिल्म राणाबली की रिलीज से पहले रश्मिका मंदाना ने इन तस्वीरों के इंस्टा कैप्शन में लिखा है- राणाबाली जयम्मा, एक और दिन... उम्मीद है कि सब कुछ अच्छा रहे... और आप लोगों को यह फिल्म पसंद आए, और जयम्मा भी पसंद आए। बता दें कि जयम्मा फिल्म में रश्मिका के किरदार का नाम है। आलम ये है अब कि रश्मिका मंदान की ये लेटेस्ट फोटोज सोशल मीडिया पर आग की तरह वायरल हो रही हैं। फैंस को उनके लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें काफी पसंद आ रही हैं, वे इन पर जमकर लाइक और कमेंट करके अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कर रहे हैं। मालूम हो कि शादी के बाद रश्मिका मंदाना की अपने पति और साउथ सुपरस्टार विजय देवरकोंडा संग राणाबली उनकी पहली फिल्म है। इससे पहले ये कपल डियर कॉमरेड और गीता गोविंदम नाम की सुपरहिट फिल्में भी बतौर कलाकार नजर आ चुके हैं। रश्मिका मंदाना की राणाबली थिएटर्स में रिलीज हो रही है। इस ड्रामा पीरियड मूवी के बाद बतौर अभिनेत्री रश्मिका अन्य कई मूवीज में भी दिखाई देंगी, जिनमें से सबसे अधिक चर्चा फिल्म मायसा को लेकर हो रही हैं। इससे मूवी से एक्ट्रेस का इंटेंस लुक हर तरफ छाया हुआ है।



चेहरेमें छिपे हैं मौतके संकेत

क्या किसी कैंसर मरीज के चेहरे को देखकर ये बताया जा सकता है कि वो कितने दिन जिंदा रहेगा? वैज्ञानिकों का दावा है कि ऐसा हो सकता है। बोस्टन स्थित मैसाचुसेट्स जनरल ब्रिघम कैंसर इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा मॉडल बनाने का दावा किया है जो तस्वीर देखकर चेहरे में छिपे मौत के संकेत पहचान लेगा। एआई आधारित इस मॉडल को 4 करोड़ से ज्यादा तस्वीरों से ट्रेंड किया गया है। इसका नाम FAHR-FaceAge रखा गया है जो चेहरे से किसी भी व्यक्ति की असल उम्र बता सकता है। ये मॉडल ये भी पता लगा सकता है कि शरीर में क्या दिक्कतें हैं और उनकी वजह से उसके जीवन को कितना खतरा है. वैज्ञानिकों की इस रिसर्च को द लैंसेज डिजिटल हेल्थ जर्नल में प्रकाशित किया गया है। मैसाचुसेट्स जनरल ब्रिघम कैंसर इंस्टीट्यूट के रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट रेमंड मैक ने इसे लीड किया है। उन्होंने दावा किया कि तस्वीर से किसी व्यक्ति की मौत का जोखिम पता लगाने वाला यह अपने तरह का पहला मॉडल है. मॉडल का कैंसर मरीजों पर रिसर्च किया गया. इसमें खतरे के हिसाब से 10-10 प्रतिशत मरीजों के 10 वर्ग बनाए गए. इनमें एआई मॉडल ने जिन 10 प्रतिशत मरीजों की मौत के बारे में सबसे ज्यादा खतरा जताया था उनमें से आधी की मौत 90 दिन के अंदर हो गई। जो 10 प्रतिशत मरीजों में मौत की संभावना बेहद कम थी उनमें से सिर्फ 2 प्रतिशत की ही मौत हुई। पिछले साल फेसएज अध्ययन में शुरुआती तौर पर ये साबित किया गया था कि किसी व्यक्ति के चेहरे की तस्वीर से उसकी उम्र का अनुमान लगाया जा सकता है। इस पर काम किया और मॉडल तैयार किया जो ज्यादा सटीक है। इसी का दूसरा पार्ट फेससर्वाइवल है जो कैंसर मरीजों में मृत्यु के जोखिम का सीधे अनुमान लगाता है। 30 हजार कैंसर



मरीजों की तस्वीरों और उनके इलाज तथा मेडिकल हिस्ट्री से जुड़ी जानकारियों का अध्ययन किया। इसमें ये जानकारी दी गई थी कि संबंधित मरीजों के जीने की संभावना कितनी है। इस डाटा में उन मरीजों की जानकारी भी शामिल थी जो अब इस दुनिया में नहीं है. डाटा में ये भी बताया गया था कि मरीज कितने समय तक जीवित रहे, कैंसर का पता चलने के बाद उनकी मृत्यु हुई या नहीं और अगर हुई तो कब हुई। मॉडल को ऐसे ट्रेंड किया गया जिससे ये आंखों के नीचे के हिस्से और नाक के ऊपरी हिस्से के आसपास चेहरे पर ज्यादा ध्यान देता है हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि एल्गोरिदम चेहरे के इन हिस्सों में वास्तव में किन संकेतों को पहचानता है और उन संकेतों के आधार पर निष्कर्ष तक कैसे पहुंचता है. रिसर्च में जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के मशीन लर्निंग एंड हेल्थकेयर लैब की प्रोफेसर और निदेशक सुची सारिया भी शामिल रहीं। अभी हमें यह नहीं पता कि चेहरे के इन हिस्सों में मौजूद कौन-सी शारीरिक विशेषताएं ऐसे संकेत दे रही हैं हालांकि मैक हिप्पेक्रेट्स की पुस्तक बुक ऑफ प्रोग्नोस्टिक्स का उदाहरण देते हैं जिसमें ये बताया गया है कि मौत का चेहरा कैसा होता है। इसके मुताबिक जब नाक नुकीली हो जाए, आंखें धंसी हों और कपटियां पिचकने लगें तो समझ लेना चाहिए की मौत नजदीक है। उन्होंने दावा किया कि मॉडल भी इसी से अंदाजा लगा रहा है। वैज्ञानिक मॉडल की कुछ सीमाओं को स्वीकार कर रहे हैं। उनका कहना है कि इसकी विश्वसनीयता जांचने के लिए अलग-अलग देशों और अलग-अलक बैकग्राउंड वाले लोगां को रिसर्च की जरूरत है. इसी साल प्रकाशित एक अन्य अध्ययन में मैक और उनके सहयोगियों ने कई वर्षों के दौरान ली गई तस्वीरों का विश्लेषण किया था. इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि समय के साथ जैविक उम्र के अनुमान में किस तरह बदलाव आता है और इन बदलावों का मरीजों के जीवित रहने की अवधि से क्या संबंध है।